कबीरा खोजत फिरत मुकाम

काव्य-संग्रह

निर्मलचन्द निर्मल

कवीरा खोजत फिरत मुकाम

काव्य-संग्रह

निर्मलचन्द निर्मल

© लेखकाधीन

ISBN - 978-93-80296-51-7

प्रथम संस्करण - 2017

मूल्य - 150/-

प्रकाशक

अमन प्रकाशन
नमक मंडी, सागर 470002 (म.प्र.)
मोबा. - 9826434225

अक्षर संयोजन

एक्टिव कम्प्यूटर्स
नमक मंडी, सागर 470002 (म.प्र.)
दूरभाष - 07582-406929

मुद्रक

सालासर इमेजिंग सिस्टम
दिल्ली

अनुक्रम

प्रो. सुरेश आचार्य - न खोने का डर : न पाने की चाहत 9
श्री टीकाराम त्रिपाठी - नये मुहावरे गढ़ने वाले कवि निर्मल जी 11
निर्मल चन्द निर्मल - मेरी बात 15
1. सरस्वती वन्दना 17
2. नूतन वर्ष 18
3. सागर सपूत- हरीसिंह गौर 19
4. धर्म धारणा 20
5. आप में सामर्थ्य है 21
6. जल जीवन का राग 23
7. शेष सभी व्यवहार 25
8. संबंधों की नाव 26
9. मुक्तक 28
10. मन के काँटे पर पर तो तौलो 30
11. पेट का कर्ज चुकाती है 32
12. कबीरा खोजत फिरत मुकाम 34
13. देश के ये कैसे हालात 36
14. खानापूर्ति 38
15. अनजाना भय - दुविधा 40
16. शोक सांत्वना 42
17. जगत को समझ न पाये 44
18. यही एक बीमारी 46
19. उम्र का विस्तार 48
20. कुछ तो है जो समझ में आता नहीं है (भाग 2) 50
21. चाहिए एक नया अवतार 52
22. जीवन से विश्राम 54
23. शब्द महिमा 56
24. बहुत किया है प्यार जगत से 58
25. समझ काम करती है 60

26. गीत गाओ 62
27. नीम का पेड़ 63
28. अपनी पहचान 65
29. धरती के आसरे पै टिका आसमान है 67
30. किससे कौन कहे 69
31. समय की धूप 71
32. जिन्दगी (चार दिन) 72
33. भींगा हृदय 73
34. वह पक्षी है आदमी नहीं है 74
35. बसंत आ गया है 75
36. उड़ना लाजमी है 76
37. गूंगे का गुड़ 77
38. चुप्पी 78
39. डरता हूँ इनकी मृत्यु से 79
40. समर्पण 80
41. लालसा 81
42. कविता लिखूंगा 82
43. पढ़ाई 84
44. सुरक्षित नाप 85
45. शब्द गरिमा 86
46. मर्यादायें 87
47. हम बसुंधरा तरु के पत्ते 88
48. कौन समझेगा 89
49. ऋण तो अदा करो 90
50. प्रातः काल 91
51. भूख लगी है हमें रोटी लाओ 92
52. स्वर्णयुग 93
53. जिस्म पर छाले हुए 94
54. जन्म दिन 95
55. अलग अलग मैखाने निकले 96

नीम का पेड़

खड़ा नीम का पेड़, गीत की परिभाषा देता।
शीतल छाँव हवा के झोंके
आश्रय कुंज लिए
सुस्ताने वाले को थपकी
देते मृदुल ठिये,
अपनी पतवारों से प्रतिपल पवन नाव खेता
खड़ा नीम का पेड़ गीत की परिभाषा देता।
अलंकार, रस, छन्द, डालियाँ
पत्ती और निबोरी
मादकता तासीर ध्वनित है
छैंया गोरी-गोरी
मानस की गगरी भर जाता निश्छल भाव प्रणेता
खड़ा नीम का पेड़ गीत की परिभाषा देता।
निर्विकार माधुर्य प्रसारित
संशयरहित विजय है
जीवन पूरा परोपकार में
स्वस्थ निरोगी लय है
सद्बुद्धि भरता प्राणों में दुर्बुद्धि का क्रेता
खड़ा नीम का पेड़ गीत की परिभाषा देता।

निर्मल चन्द निर्मल

पूर्व प्रकाशित कृतियां - सत्रह हैं, यथा

(1) उठाओ कुदाली
(2) और कुछ नहीं हुआ
(3) गीत वही लिख पाता है
(4) गीत है ये जिन्दगी
(5) कुछ ऐसे लोग हुआ करते
(6) याद नहीं बिसरी
(7) जुगनुओं के पास भी ईमान है
(8) पसीना बोलता है
(9) गुड़िया पूछ रही मम्मी से
(10) प्रेमरूपी रंग कितने
(11) द्रवणांक
(12) आगे कौन बढ़े
(13) प्रीत के सुख-दुख घनेरे
(14) मील के पत्थर नहीं कोई
(15) एक पहर दिनमान शेष है
(16) निर्मल सतसई
(17) त्रिधारा

विशेष - टी.व्ही. और आकाशवाणी से हिन्दी और बुन्देली रचनाओं के काव्य पाठ होते रहते हैं। मेरे समग्र साहित्यिक अवदान पर संपादक त्रय डॉ. सरोज गुप्ता, डॉ. लक्ष्मी पाण्डे और डॉ. घनश्याम भारती ने एक अभिनंदन ग्रन्थ 'सत्य से साक्षात्कार के कवि निर्मलचंद निर्मल' दिल्ली से प्रकाशित कराया है। देश में मुझे जो साहित्यिक सम्मान मिले उनकी संख्या शताधिक है।

संबद्धता - हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रगतिशील लेखक संघ, हिन्दी उर्दू मजलिस और श्यामलम साहित्यिक सांस्कृतिक संस्थाओं से संबद्ध।

निवास - 89 बी, मधुवन ग्रीन्स, तिली वार्ड, सागर (म.प्र.) 470002
मो. 9993949714

ISBN-978-93-80296-51-7
9 789380 296517

अमन प्रकाशन
कटरा, नमक मण्डी, सागर (म.प्र.)
# 9826434225